

# योएल की पुस्तक और लाओदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या तेरह

Jeff Pippenger

2025-12-18

## संख्या तेरह

हम वर्तमान में 1863 के भविष्यसूचक प्रतीक पर चर्चा कर रहे हैं। हमने अपना ध्यान बाइबिलीय कादेश पर केंद्रित किया है, जो प्राचीन इस्राएल के "विश्राम" के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक है—ऐसा विद्रोह जो एक ऐसे काल में उनकी मृत्यु का कारण बना जिसका समापन कादेश पर हुआ; इस प्रकार यह 1863 में यिर्मयाह के "पुराने मार्गों" के अस्वीकार को दर्शाता है, जब लैव्यव्यवस्था छब्बीस के "सात समय" को अस्वीकार कर दिया गया था।

कादेश और 1863 से संबंधित प्रकाश की खोज में, हम उन दस परीक्षाओं की पहचान करते आए हैं जो कादेश तक ले गईं। हमने पहली तीन परीक्षाओं को मन्ना की परीक्षा के रूप में पहचाना है। उन तीन चरणों को चमत्कारों या परीक्षाओं के रूप में दर्शाया जा सकता है, और सब्त का विश्राम, जो दस परीक्षाओं में प्रथम है, दसवीं परीक्षा के अनुरूप है, जिसे पौलुस ने इब्रानियों में बहुत स्पष्ट रूप से "विश्राम" के रूप में पहचाना है। इन दस परीक्षाओं में एक अल्फा विश्राम और एक ओमेगा विश्राम है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि भविष्यवाणी का विद्यार्थी "विश्राम" को कैसे परिभाषित करना चाहता है, जिसे इब्रानियों ने कादेश में अस्वीकार कर दिया था—क्योंकि भविष्यवाणी की दृष्टि से हर "विश्राम" (पंक्ति पर पंक्ति) "विश्राम और ताज़गी" की ओर ही संकेत करता है, जो कि अन्तिम वर्षा है। कादेश अन्तिम वर्षा के संदेश तथा अन्तिम वर्षा के अनुभव—दोनों के अस्वीकार का प्रमुख प्रतीक है, क्योंकि कादेश में एक लाख चवालीस हज़ार पर जो मुद्रांकन होता है, वह सत्य में "बौद्धिक और आध्यात्मिक" दोनों रूप से स्थिर हो जाना है।

जैसे ही परमेश्वर के लोगों के मस्तकों पर मुहर कर दी जाती है—यह कोई ऐसी मुहर या निशान नहीं है जो दिखाई दे, बल्कि सत्य में ऐसा स्थिर हो जाना है, बौद्धिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से, कि उन्हें डिगाया न जा सके—जैसे ही परमेश्वर के लोग मुहरबंद होकर उस हिलाहट के लिए तैयार हो जाते हैं, वह आ जाएगी। वास्तव में, यह तो पहले ही आरंभ हो चुका है; परमेश्वर के न्याय अब भूमि पर हैं, ताकि हमें चैतावनी मिले, जिससे हम जान सकें कि क्या आने वाला है। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, वॉल्यूम 4, 1161.

"सत्य में" "बौद्धिक रूप से" स्थिर होना, परमेश्वर के वचन के अध्ययन में पंक्ति पर पंक्ति की पद्धति को एकमात्र पवित्रीकृत दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार करना है। यह संकीर्ण दृष्टिकोण अगस्त 1840 में सही दृष्टिकोण के रूप में पुष्ट हुआ, जब "अनेक लोग मिलर और उनके सहयोगियों द्वारा अपनाए गए भविष्यवाणी की व्याख्या के सिद्धांतों की सत्यता के प्रति आश्चस्त हो गए, और एडवेंट आंदोलन को एक अद्भुत प्रेरणा मिली।" यह "अद्भुत प्रेरणा" पवित्र आत्मा की उस शक्ति के प्रगटीकरण का प्रतिनिधित्व करती है, जिसने 1840 में प्रथम स्वर्गदूत का संदेश सारे विश्व में पहुंचाया।

"अद्भुत प्रेरणा" का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्य में भाग लेने वालों को उसी कार्य को करने की सामर्थ्य पवित्र आत्मा की शक्ति से मिली। पवित्र आत्मा ने अपनी शक्ति का प्रकटीकरण केवल उन्हीं के बीच किया जिन्होंने पवित्र पद्धति को स्वीकार किया था। पवित्र आत्मा ने अपनी शक्ति का प्रकटीकरण केवल उन्हीं के भीतर किया जिन्होंने पवित्र पद्धति को स्वीकार किया था।

सत्य में बौद्धिक रूप से स्थिर होना, पंक्ति-दर-पंक्ति पद्धति को स्वीकार करना है; और पंक्ति-दर-पंक्ति पद्धति का यह 'स्वीकार' एक लाओदीकियाई के लिए इस रूप में दर्शाया गया है कि पवित्र आत्मा के रूप में लाओदीकिया के

दूत के प्रवेश हेतु हृदय-द्वार खुल जाता है। इस पवित्र पद्धति को स्वीकार करना, सत्य में बौद्धिक रूप से स्थिर हो रहे व्यक्तियों के मन में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य ले आता है। उस पद्धति का स्वीकार उस आत्मिकता को उत्पन्न करता है जिसे दैवत्व और मानवता के संयोग के रूप में प्रस्तुत किया गया है। बाइबलीय पंक्ति-दर-पंक्ति पद्धति का प्रयोग, जब विश्वास के साथ मिलाया जाता है, तो उसे सत्य में बौद्धिक रूप से स्थिर होना बताया गया है; और उस पद्धति से उत्पन्न सत्य (संदेश) को यीशु, जो वचन हैं, से अलग नहीं किया जा सकता। उनके वचन के संदेश को स्वीकार करना, अपने मन में पवित्र आत्मा को स्वीकार करना है। इस प्रकार, सत्य में बौद्धिक रूप से स्थिर होना वह आत्मिक अनुभव उत्पन्न करता है जिसे परमेश्वर की स्वीकृति की मुहर प्राप्त होती है।

कादेश प्राचीन इस्राएल के लिए अंतिम परीक्षा था। योएल की पुस्तक में दाखमधु पीने वालों की दो श्रेणियाँ हैं, जिन्हें 'अंतिम वर्षा' के संदेश को स्वीकार या अस्वीकार करने के आधार पर एक-दूसरे से अलग और भिन्न ठहराया गया है; योएल इस संदेश को 'नया दाखमधु' कहता है, जो दूसरी श्रेणी द्वारा पिए जा रहे किण्वित दाखमधु के विपरीत है। योएल का 'नया दाखमधु' इब्रानियों के तीसरे और चौथे अध्याय में पौलुस के 'विश्राम' के समान है। यही वह बात है जिसे यशायाह के 'एफ्रैम के मद्यपायी' सुनने से इनकार करते हैं—जिनसे उसने कहा, 'यह वह विश्राम है जिसके द्वारा तुम थके हुए को विश्राम दे सकते हो; और यह वह ताज़गी है'; फिर भी उन्होंने सुनना नहीं चाहा। परन्तु उनके लिये यहोवा का वचन उपदेश पर उपदेश, उपदेश पर उपदेश; रेखा पर रेखा, रेखा पर रेखा; यहाँ थोड़ा, वहाँ थोड़ा हो गया; ताकि वे जाकर पीठ के बल गिरें, टूटें, फँसें और पकड़े जाएँ।

हमने यह पहचाना है कि हारून के सुनहरे बछड़े का विद्रोह उन दस परीक्षाओं में से 'दो' का प्रतिनिधित्व करता है जो कादेश पर समाप्त होती हैं। उस परीक्षा का दो परीक्षाओं में विभाजन अंतिम वर्षा के परीक्षण काल के अनुरूप है, जिसे "पशु की प्रतिमा की परीक्षा" द्वारा दर्शाया गया है, जो परमेश्वर के लोगों की नियति निर्धारित करने वाली परीक्षा है। प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह 'विद्रोह' की ओर संकेत करता है, क्योंकि संख्या 'तेरह' विद्रोह का प्रतिनिधित्व करती है।

अध्याय की शुरुआत पापाई समुद्री पशु से होती है, जो पृथ्वी पर विद्रोह का प्रधान प्रतीक है, क्योंकि दानियेल इसे उस शक्ति के रूप में पहचानता है जो परमप्रधान के विरुद्ध बड़े-बड़े वचन बोलती है। उस विद्रोह के बाद पृथ्वी के पशु, अर्थात् संयुक्त राज्य अमेरिका, का विद्रोह आता है, जो फिर पूरे संसार को अपने विद्रोह के उदाहरण का अनुकरण करने के लिए बाध्य करता है। अध्याय के तीसरे विद्रोह का ढाँचा तीनों विद्रोहों में से पहले में मिलता है, जो समुद्री पशु के रूप में, अर्थात् वेटिकन के प्रतीक के रूप में, प्रस्तुत है। पद ग्यारह में संयुक्त राज्य अमेरिका अजगर की तरह बोलता है और इस प्रकार पशु की प्रतिमा—वेटिकन की प्रतिमा—बनाता है। पद बारह से आगे संयुक्त राज्य अमेरिका दुनिया को वही करने के लिए मजबूर करता है। हारून का विद्रोह दोहरा है: वह पहले संयुक्त राज्य अमेरिका के विद्रोह का और फिर समस्त विश्व के विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता है, जब वेटिकन की विश्व प्रतिमा प्रवर्तित की जाती है।

हारून का विद्रोह दोनों कालखंडों की पहचान करता है—जब मूसा वहाँ नहीं थे तब मूर्तिपूजा, और उसके बाद जब मूसा वहाँ थे तब भी मूर्तिपूजा। मूसा व्यवस्था प्राप्त कर रहे थे, और इसलिए वे विद्रोह में परमेश्वर की व्यवस्था को 'डाइविंग पॉइंट' के रूप में दर्शाते हैं। हारून की बछड़े-प्राणी की सुनहरी प्रतिमा द्वारा प्रस्तुत परीक्षा 1863 की परीक्षा है।

यह रविवार के कानून की परीक्षा है, जो जीवन और मृत्यु के बीच की सीमारेखा का प्रतिनिधित्व करती है। यह प्रतिज्ञात देश और मरुभूमि में मृत्यु के बीच की सीमारेखा है; यह पशु के चिन्ह और परमेश्वर की मुहर के बीच की सीमारेखा है; यह लाओदिकियाई शेबना के भाग्य और फिलाडेल्फियाई एलियाकीम के भाग्य के बीच की सीमारेखा है। मन्ना द्वारा दर्शाई गई पहली तीन परीक्षाएँ सब्त या रविवार के विवाद का प्रतीक हैं; दसवीं परीक्षा भी ऐसा ही करती है। हारून के स्वर्ण बछड़े के विद्रोह में जो सीमारेखा थी, वह पाँचवीं और छठी दोनों परीक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है—और वही रविवार का कानून है।

चौथी परीक्षा 'मस्साह' और 'मेरीबा' के पानी की है—'मस्साह' का अर्थ 'परीक्षा' और 'मेरीबा' का अर्थ "यहोवा का ध्वज" है—और यह निर्गमन 17:1-7 में वर्णित है, जहाँ इसे सीधे "प्रभु की परीक्षा" कहा गया है।

और इस्राएल की सन्तानों की सारी मण्डली प्रभु की आज्ञा के अनुसार अपने-अपने पड़ावों के मुताबिक सीन के जंगल से चली और रफ़ीदिम में डेरा डाला; पर वहाँ लोगों के पीने को पानी न था। इसलिए लोगों ने मूसा से झगड़ा किया और कहा, "हमें पानी दे ताकि हम पी सकें।" मूसा ने उनसे कहा, "तुम मुझ से क्यों झगड़ते हो? तुम प्रभु की परीक्षा क्यों लेते हो?" और लोग वहाँ पानी के लिए तरसते रहे; और लोगों ने मूसा के विरुद्ध बड़बड़ाकर कहा, "यह क्यों है कि तू हमें मिस्र से निकाल लाया है, कि हमें, हमारे बच्चों और हमारे पशुओं को प्यास से मार डाले?"

और मूसा ने यहोवा को पुकारकर कहा, मैं इस प्रजा के साथ क्या करूँ? वे तो मुझे पत्थरों से मार डालने को लगभग तैयार हैं।

और प्रभु ने मूसा से कहा, लोगों के आगे आगे जा, और अपने साथ इस्राएल के बुजुर्गों में से कुछ को ले; और अपनी वह लाठी, जिससे तूने नदी पर प्रहार किया था, उसे अपने हाथ में लेकर चल। देख, मैं वहाँ होरेब में उस चट्टान पर तेरे सामने खड़ा रहूँगा; और तू उस चट्टान पर प्रहार करेगा, और उसमें से पानी निकलेगा, ताकि लोग पी सकें। और मूसा ने इस्राएल के बुजुर्गों के सामने वैसा ही किया।

और उसने उस स्थान का नाम मासा और मेरिबा रखा, क्योंकि इस्राएलियों के झगड़े के कारण, और क्योंकि उन्होंने यहोवा को परखा, यह कहते हुए, क्या यहोवा हमारे बीच है, या नहीं? निर्गमन 17:1-7.

"मस्सा" द्वारा निरूपित परीक्षा और "मेरीबा" द्वारा निरूपित पताका मिलकर भविष्यवाणी का 'अल्फा' बनते हैं, जो तब अपने भविष्यवाणीगत 'ओमेगा' से मिलता है जब मूसा उसी चट्टान पर दूसरी बार प्रहार करता है। इसका अर्थ है कि दस उकसावों में से चौथा कादेश में निरूपित है, क्योंकि दूसरा कादेश वही स्थान है जहाँ मूसा विद्रोह में उसी चट्टान पर प्रहार करता है। यह दर्शाता है कि कादेश, एक प्रतीक के रूप में, उस जल-परीक्षा को समाहित करता है जिससे एक पताका उत्पन्न होती है।

वह जल से संबंधित परीक्षा जो ध्वज को ऊँचा उठाती है, अंतिम वर्षा के संदेश की ही परीक्षा है। 1863 वह समय था जब ध्वज उठाया जाना चाहिए था, पर अफसोस; 1863 केवल पहला कादेश था, और दूसरा कादेश निकट आने वाले रविवार के क्रानून के समय होगा। मासा और मेरीबा, एक लाख चवालीस हजार के लिए अंतिम परीक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं, ठीक उससे पहले जब उन्हें रविवार के क्रानून पर ध्वज के रूप में ऊँचा उठाया जाएगा। मसीह की मृत्यु की व्यवस्था न तो रोम के अधिकार ने की थी, न ही यहूदियों के अधिकार ने। वह अधिकार क्रूस से युगों पहले ही स्वर्गीय परामर्श में अधिकृत किया गया था। मूसा ने अपनी छड़ी—वही छड़ी जिसे स्वयं परमेश्वर ने अभिषेक किया था—से चट्टान पर प्रहार किया, परंतु केवल एक बार। प्रेरणा के अनुसार वह चट्टान 1840 से 1844 तक के संदेशों द्वारा दर्शाई जाती है, जो पुराने आधारभूत सत्य हैं और धर्मियों के मार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। मासा द्वारा दर्शाई गई परीक्षा में उद्धार करने वाला जल वही है जो पुराने मार्गों की चट्टान से निकलता है। वही जल परीक्षा लेता है और दो वर्ग उत्पन्न करता है: एक पशु की छाप के लिए, और दूसरा परमेश्वर की मुहर के लिए—जैसा कि मेरीबा द्वारा दर्शाया गया है, ध्वज के रूप में उठाए गए लोगों पर परमेश्वर की मुहर द्वारा।

मंदिर राजा अर्तक्षत्र के तीसरे फ़रमान से पहले ही पूरा हो गया था, जिससे यह सिद्ध होता है कि 1798 से 1844 तक छियालिस वर्षों में मसीह द्वारा स्थापित किया गया मिलरवादी मंदिर, तीसरे फ़रमान के आगमन से दर्शाए गए तीसरे स्वर्गदूत से पहले ही पूरा हो गया था। एक लाख चवालीस हजार पर मुहर रविवार के क्रानून से ठीक पहले लगा दी जाती है, जहाँ वे तब पेंतेकोस्त के पहिलौठे फलों की भेंट के रूप में एक संकेत-पताका की तरह ऊँचा उठाए जाते हैं, जैसा पूर्वकाल में था। मस्सा और मेरीबा उस जल-परीक्षा की पहचान कराते हैं, जो पहले और तीसरे स्वर्गदूतों के इतिहास में मध्यरात्रि की पुकार के संदेश द्वारा दर्शाई गई है।

दैवीयता और मानवता के मिलन का कार्य दो मंदिरों के मिलन के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। इसे विवाह के रूप में भी दर्शाया गया है, जहाँ एक पुरुष और एक स्त्री, या एक स्त्री-मंदिर और एक पुरुष-मंदिर, आपस में जुड़कर एक देह बन जाते हैं। मसीह ने मिलराइट मंदिर की स्थापना इस उद्देश्य से की कि वह उन्हें अपने स्वर्गीय मंदिर में ले जाए, जहाँ उन्हें "विश्राम" मिलेगा, जिसका प्रतिनिधित्व 1844 के इतिहास में सातवें दिन के सब्त द्वारा किया गया था।

जब मस्सा और मेरिबा की यह समझ, चौथी परीक्षा के रूप में, उस प्रारंभिक परीक्षा और पाँचवीं और छठी परीक्षाओं के 'रविवार के कानून' के बीच लागू की जाती है—वह प्रारंभिक परीक्षा स्वयं भी तीन परीक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है—तब आप देख सकते हैं, पर केवल यदि आप देखने के इच्छुक हैं, कि मन्ना की त्रिविध परीक्षा पहली परीक्षा है, और उसके बाद एक ऐसी परीक्षा आती है जो हारून के सोने के बछड़े की तीसरी द्विविध परीक्षा की ओर अग्रसर होती है। मस्सा और मेरिबा साथ में दर्शाए गए हैं, क्योंकि 'भविष्यसूचक दोहरेपन' केवल दूसरे स्वर्गदूत के संदेश में ही पाया जाता है। मन्ना की पहली तीन परीक्षाएँ पहले स्वर्गदूत का संदेश हैं। मस्सा और मेरिबा की परीक्षा दूसरे स्वर्गदूत का संदेश है और हारून का विद्रोह तीसरे स्वर्गदूत का संदेश है।

पाँचवीं परीक्षा हारून के सोने के बछड़े की परीक्षा है, जो मूर्तिपूजा के प्रकट होने से तब शुरू होती है जब विद्रोहियों ने सोचा कि उनकी नंगी बगावत परमेश्वर से छिपी हुई है।

जब लोगों ने देखा कि मूसा पहाड़ से नीचे आने में देर कर रहा है, तो लोग इकट्ठे होकर हारून के पास आए और उससे कहा, "उठ, हमारे लिए ऐसे देवता बना दे जो हमारे आगे-आगे चले; क्योंकि यह मूसा, जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया, उसके बारे में हमें नहीं मालूम कि उसका क्या हुआ है।" हारून ने उनसे कहा, "अपनी स्त्रियों, पुत्रों और पुत्रियों के कानों में जो सोने के कर्णफूल हैं, उन्हें उतारकर मेरे पास लाओ।" तब सब लोगों ने अपने कानों में जो सोने के कर्णफूल थे, उन्हें उतारकर हारून के पास ले आए। उसने उन्हें उनके हाथ से लिया, और उन्हें पिघलाकर एक बछड़ा ढाला, और नक्काशी के औज़ार से उसे गढ़ा; तब वे बोले, "हे इस्राएल, ये तेरे देवता हैं, जिन्होंने तुझे मिस्र देश से निकाला।" हारून ने यह देखकर उसके सामने एक वेदी बनाई; और हारून ने घोषणा की, "कल प्रभु के लिए पर्व होगा।"

और वे अगले दिन सुबह-सुबह उठे, और होमबलियाँ चढ़ाई, और मेलबलियाँ लाए; और लोग खाने-पीने को बैठ गए, और खेलने को उठ खड़े हुए। निर्गमन 32:1-6.

छठी परीक्षा स्वर्ण बछड़े के विद्रोह का दूसरा भाग है, जब मूसा दस आज्ञाएँ प्राप्त करके लौटते हैं। मूसा पूछते हैं, "प्रभु के पक्ष में कौन है?" अधिकांश लोग निष्क्रिय रहे या मूर्तिपूजकों के साथ जा मिले, और मध्यस्थ की उपस्थिति में उसी विद्रोह को खुले तौर पर प्रकट किया।

पाँचवीं और छठी परीक्षाएँ स्पष्ट रूप से रविवार के कानून का प्रतीक हैं और उसके साथ मेल खाती हैं। कर्मल पर्वत पर एल्याह वही प्रश्न पूछता है जो मूसा ने पूछा था। "आज ही चुनो कि तुम किसकी सेवा करोगे," यह रविवार के कानून की परीक्षा की ओर इंगित करता है। पशु की प्रतिमा वाली परीक्षा का प्रतीकवाद रविवार के कानून की ओर संकेत करता है। हारून की कथा में लेवियों का विभाजन, और यारोबाम के दो सोने के बछड़ों की कथा में बारह गोत्रों का विभाजन, रविवार के कानून के समय बुद्धिमानों और मूर्खों के विभाजन की पहचान कराते हैं। बहन वाइट की गवाही के अनुसार, लाओदीकियाई मूर्ख कुँवारियों हैं; अतः रविवार के कानून के समय कुँवारियों का विभाजन लाओदीकियाइयों और फ़िलाडेल्फ़ियाइयों के बीच का विभाजन है। पाँचवीं और छठी परीक्षाएँ, जो एक ही दोहरी परीक्षा हैं, रविवार के कानून के साथ मेल खाती हैं; अर्थात् वे 1863 और कादेश के साथ मेल खाती हैं।

निर्गमन के बत्तीसवें और तैंतीसवें अध्याय उसी दिन, कुछ ही घंटों के अंतर से, पूरी होती हैं, और वह दिन 1863 और कादेश का प्रतीक है। अध्याय तैंतीस में मूसा परमेश्वर की महिमा देखने का निवेदन करता है। इसलिए, हम पाँचवें और छठे विद्रोह में मूसा को एक लाख चवालीस हज़ार में रूपांतरित होते हुए देखते हैं। वही मूसा कादेश में चट्टान पर दूसरी बार प्रहार करता है, और इस प्रकार उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो उस चट्टान पर गिरने से इन्कार करके उसी चट्टान से कुचले जाते हैं। वह चट्टान एक संदेश है, और इसलिए कादेश में मूसा के दो प्रतीक हैं—एक जो परमेश्वर की

महिमा प्रकट करता है और दूसरा जो चट्टान को अस्वीकार करता है।

जो परमेश्वर के प्रहरी बनकर सिंघ्योन की दीवारों पर खड़े हैं, वे ऐसे पुरुष हों जो लोगों पर आने वाले खतरों को पहले से देख सकें, और जो सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म में भेद कर सकें।

“चेतावनी आ चुकी है: किसी भी ऐसी बात को प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जानी है जो उस विश्वास की नींव को विचलित करे, जिस पर हम 1842, 1843, और 1844 में संदेश आने के समय से ही निर्माण करते आए हैं। मैं इस संदेश में थी, और तब से अब तक मैं उस ज्योति के प्रति सच्ची रहकर संसार के सामने खड़ी रही हूँ जो परमेश्वर ने हमें दी है। हमारा यह विचार नहीं है कि हम अपने पांव उस मंच से हटा लें, जिस पर उन्हें रखा गया था, जब हम दिन-प्रतिदिन गंभीर प्रार्थना के साथ प्रभु को खोजते हुए ज्योति की याचना करते थे। क्या तुम सोचते हो कि मैं उस ज्योति का त्याग कर सकती हूँ जो परमेश्वर ने मुझे दी है? वह युगों की चट्टान के समान है। जब से वह मुझे दी गई, तभी से वह मेरा मार्गदर्शन करती आई है।” *Review and Herald, April 14, 1903.*

‘कादेश में मूसा’ के प्रतीकों में से एक है कि वह अधिकार के प्रतीक लाठी से शिला पर प्रहार करता है। पहली बार वह परमेश्वर का अधिकार था और दूसरी बार वह मनुष्य का अधिकार था। दूसरे कादेश में मूसा द्वारा जिस वर्ग का प्रतिनिधित्व किया गया, उसे इफ्राईम के मद्यपों के रूप में दर्शाया गया है, जो अपने धर्मशास्त्रीय प्राधिकार (लाठी) का उपयोग ‘अंतिम वर्षा’ के संदेश पर आक्रमण करने के लिए करते हैं, जो 1840 से 1844 के पुराने मार्गों का संदेश है।

“1840-1844 के बीच दिए गए सभी संदेशों को अब प्रभावशाली रीति से प्रस्तुत किया जाना है, क्योंकि बहुत से लोग अपना मार्ग-बोध खो चुके हैं। ये संदेश सब कलीसियाओं तक पहुँचने हैं। ”

“मसीह ने कहा, ‘धन्य हैं तुम्हारी आँखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मी जनों ने उन बातों को देखने की अभिलाषा की, जिन्हें तुम देखते हो, पर नहीं देखा; और उन बातों को सुनने की, जिन्हें तुम सुनते हो, पर नहीं सुना’ [Matthew 13:16, 17]। धन्य हैं वे आँखें जिन्होंने 1843 और 1844 में देखी गई बातों को देखा।”

“संदेश दे दिया गया था। और संदेश को फिर से सुनाने में कोई विलंब नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय के चिन्ह पूरे हो रहे हैं; समापन का कार्य अवश्य किया जाना है। थोड़े समय में एक महान कार्य किया जाएगा। परमेश्वर की नियुक्ति से शीघ्र ही एक संदेश दिया जाएगा जो प्रबल पुकार में परिवर्तित हो जाएगा। तब दानियेल अपने भाग में खड़ा होगा, अपना साक्ष्य देने के लिए।” *Manuscript Releases, volume 21, 437.*

मन्ना की पहली परीक्षा तीन परीक्षाओं से बनी है। दस परीक्षाओं में अंतिम परीक्षा तीसरे स्वर्गदूत की परीक्षा है। पहली और अंतिम दोनों परीक्षाएँ, परीक्षा के प्रतीक के रूप में "विश्राम" का प्रतिनिधित्व करती हैं। पहली परीक्षा तीन परीक्षाओं से बनी है, जो पहले स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करती है और जिसके बाद दूसरा स्वर्गदूत आता है, परंतु चौथी परीक्षा, जिसमें मुहर लगाना और ध्वज के रूप में ऊँचा उठाया जाना शामिल है, मस्सा और मेरिबा द्वारा दर्शाई गई है। तीसरा स्वर्गदूत, जिसे पाँचवीं और छठी परीक्षाएँ दर्शाती हैं, तीसरी परीक्षा है, जो मस्सा और मेरिबा की दूसरी परीक्षा और मन्ना की पहली परीक्षा के बाद आती है।

गिनती 11:1-3 में प्रस्तुत Taberah की उकसाने वाली घटना सातवीं परीक्षा है। ‘Taberah’, जिसका अर्थ ‘जलने का स्थान’ है, द्वारा दर्शाई गई विश्वास की अग्नि-परीक्षा का परिचय कराने वाली आयतों से पहले वे आयतें आती हैं जो जंगल में परमेश्वर की प्रजा की यात्रा का वर्णन करती हैं। दसवें अध्याय में प्रकट हुई अधीरता का विरोधाभास उन एक लाख चवालीस हजार से है जो मेम्ने के पीछे-पीछे जहाँ कहीं भी वह जाता है, चलते हैं। ये वे हैं जिनमें संतों का धैर्य है; परन्तु प्राचीन इस्राएल दसवें अध्याय में अधीरता प्रकट कर रहा था, जो ग्यारहवें अध्याय में उनकी अग्नि-परीक्षा तक ले जाती है।

और वे यहोवा के पर्वत से तीन दिन की यात्रा पर निकल पड़े; और यहोवा की वाचा का संदूक उनके लिये विश्रामस्थान खोजने को तीन दिन की यात्रा में उनके आगे-आगे चलता रहा। और जब वे छावनी से निकलते थे,

तो दिन में यहोवा का बादल उनके ऊपर रहता था। और ऐसा हुआ कि जब संदूक आगे बढ़ता, तो मूसा कहता, 'उठ, हे यहोवा, और तेरे शत्रु तितर-बितर हो जाएँ; और जो तुझ से बैर रखते हैं वे तेरे सामने से भागें।' और जब वह ठहरता, तो वह कहता, 'लौट आ, हे यहोवा, इस्राएल के बहुतेरे हजारों के पास।' गिनती 10:33-36.

अगला पद ताबेरा में हुए विद्रोह का परिचय कराता है।

और जब लोग कुड़कुड़ाने लगे, तो यह प्रभु को अप्रिय लगा; और प्रभु ने इसे सुना, और उसका क्रोध भड़क उठा; और प्रभु की आग उनके बीच भड़क उठी, और छावनी के छोरों में जो थे उन्हें भस्म कर दिया। तब लोग मूसा से पुकार उठे; और जब मूसा ने प्रभु से प्रार्थना की, तो आग बुझ गई। और उसने उस स्थान का नाम ताबेरा रखा, क्योंकि उनके बीच प्रभु की आग भड़की थी। गिनती 11:1-3.

आग के प्रगटीकरण के बाद जो उकसाहट हुई, वह मांसाहार की लालसा थी, और यही आठवीं परीक्षा है। यह गिनती 11:4-34 में स्थित है। ताबेरा में की गई शिकायत एक भ्रष्ट उच्च स्वभाव और धैर्य की कमी का प्रतिनिधित्व करती है, और मिस्र के मांस के बर्तनों की लालसा की बगावत निम्न स्वभाव का। वह आग मलाकी अध्याय तीन में वाचा के दूत की अग्नि द्वारा किए जाने वाले परिशोधन का प्रतीक है, क्योंकि भविष्यसूचक रूप से 'ताबेरा' का अर्थ 'जलने का स्थान' है, और परमेश्वर के भविष्यसूचक वचन में यह जलने का स्थान मलाकी तीन में स्थित है, जहाँ आग एक अधीर वर्ग को उत्पन्न करती है जो परिशोधित किए जाने के लिए नियत है, और एक धीरजवान वर्ग को, जो उठाई हुई भेंट के समान परिशोधित किए जाते हैं।

ताबेरा के उच्च और निम्न स्वभाव की दोहरी परीक्षा में जिनका प्रतिनिधित्व मूसा करते हैं, वे वही एक लाख चवालीस हज़ार हैं जो सत्य में बौद्धिक और आध्यात्मिक—दोनों ही रूपों में—स्थापित हो चुके हैं। बुद्धि उच्च स्वभाव की पहचान करती है और आध्यात्मिक रूप से दिव्यता तथा मानवता के संयोग का प्रतिनिधित्व करती है। दिव्यता का मानवता के साथ संयोग तभी संभव है, जब निम्न स्वभाव क्रूस पर चढ़ाया गया हो और मर चुका हो। सत्य में बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से स्थिर हो जाना, मुहरबंद किए जाने के अनुभव का प्रतिनिधित्व करता है। ताबेरा की अग्नियाँ, मसीह द्वारा एक लाख चवालीस हज़ार का मंदिर स्थापित करने के कार्य में, गेहूँ और खरपतवार के अंतिम पृथक्करण का प्रतीक हैं।

नौवीं परीक्षा गिनती 12 में वर्णित मरियम और हारून का विद्रोह है। यह उकसावा कोरह, दातान और अबीराम के समान था, और सन् 1888 में मिनीयापोलिस में जो हुआ उसके समान। मुद्दा केवल परमेश्वर के संदेश को अस्वीकार करना नहीं था, बल्कि परमेश्वर द्वारा चुने गए नेतृत्व को अस्वीकार करना था।

दसवीं परीक्षा से पहले उन नेताओं की निंदा होती है जो केवल संदेश ही नहीं, बल्कि संदेशवाहक को भी अस्वीकार करते हैं। रविवार के कानून (जो कि दसवीं परीक्षा है) से ठीक पहले, नेतृत्व धर्मत्यागी के रूप में प्रकट होता है। रविवार का कानून क्रूस के साथ मेल खाता है, और क्रूस की ओर जाते हुए—जो कि वही रविवार का कानून है—नेतृत्व ने बरअब्बा, एक झूठा मसीह, को चुना, क्योंकि "बार" का अर्थ "का पुत्र" और "अब्बा" का अर्थ "पिता" होता है। क्रूस (रविवार का कानून) या कादेश के निकट आते हुए, नेतृत्व अपना धर्मत्याग पूरी तरह प्रकट करता है—एक नकली मसीह को चुनकर और नागरिक अधिकारियों से सीधे यह कहकर कि उनका कोई राजा नहीं, केवल कैसर है।

सातवीं, आठवीं और नौवीं परीक्षाएँ मुहरबंदी की प्रक्रिया की पहचान करती हैं, परन्तु दृष्टान्त मूर्ख कुँवारियों का है। उन परीक्षाओं में दसवीं कादेश की पहली बगावत थी, जो 1863 का प्रतीक है। 1846 से इब्रानियों को व्यवस्था प्राप्त करने के लिए सीनै पर लाया गया। दस आज्ञाओं की दो पट्टिकाएँ प्राचीन शाब्दिक इस्राएल के साथ परमेश्वर के वाचा-संबंध का प्रतीक हैं, और हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ आधुनिक आध्यात्मिक इस्राएल के वाचा-संबंध का प्रतीक हैं। दूसरी पट्टिका 1850 में प्रस्तुत की गई, और जिस प्रकार प्राचीन इस्राएल ने व्यवस्था का पालन करने की शपथ खाई, उसी प्रकार 1856 तक एक अंतिम परीक्षा लाई गई, जिसका प्रतिरूप प्रतिज्ञात देश की टोह लेने गए जासूसों में

देखा जाता है। 1856 से 1863 तक के सात वर्षों में जो बहुमत का मत बना, वह यह था कि लौदिकिया की मरुभूमि वही स्थान है जहाँ वे मरना चाहते थे।

1844 से 1863 की अवधि का प्रतिरूप वह काल है, जो लाल समुद्र में हुए बपतिस्मा से शुरू होकर यरदन नदी में एक अन्य बपतिस्मा पर समाप्त होता है—ठीक उसी स्थान पर, जहाँ बाद में जब यीशु को यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया, तो वे मसीह ठहराए गए। लाल समुद्र में हुए बपतिस्मा ने प्राचीन इस्राएल के साथ एक वाचा-संबंध को चिन्हित किया। वह संबंध एक विवाह से आरंभ हुआ, जिसने साथ ही दस-चरणीय परख प्रक्रिया की शुरुआत की। फिर उन्हें सीनै ले जाया गया और उन्होंने उसकी व्यवस्था का पालन करने का वचन दिया, पर किया नहीं, और फिर कादेश की पहली बगावत में वे दसवीं और अंतिम परीक्षा में असफल हो गए। चालीस वर्षों के बाद, और कादेश में दूसरी तथा और भी बड़ी बगावत के पश्चात, उन्होंने यरदन नदी में बपतिस्मा लेकर प्रतिज्ञात देश में प्रवेश किया।

बपतिस्मा के सभी मार्गचिह्न वाचा के साथ जुड़े हुए हैं। ओमेगा और दूसरे कादेश का इतिहास, पहले अर्थात् अल्फा कादेश के इतिहास से मेल खाता है। मूसा का ओमेगा विद्रोह, कादेश में हुए अल्फा विद्रोह में पूरे राष्ट्र के विद्रोह से कहीं अधिक बड़ा था। ओमेगा हमेशा बड़ा होता है। दोनों विद्रोह मिलकर यशायाह के शिक्षित और अशिक्षित के उस विद्रोह का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पश्चात वर्षा के संदेश के विश्राम में प्रवेश करने से इंकार करते हैं।

तीन बपतिस्मे (लाल समुद्र, यरदन नदी और यरदन नदी), पहला मूसा का और अंतिम मसीह का; इस प्रकार मूसा अल्फा है और मसीह ओमेगा। हिब्रू वर्णमाला के प्रथम और बाईसवें अक्षरों के बीच का अक्षर, तेरहवाँ अक्षर, जब पहले अक्षर के बाद जोड़ा जाता है और फिर उसे अंतिम, अर्थात् बाईसवें, अक्षर से जोड़ा जाता है, तो हिब्रू शब्द "सत्य" बनता है। मध्य बपतिस्मा यरदन नदी और कादेश था। लाल समुद्र में पहला बपतिस्मा हुआ, जिसके बाद यरदन में बपतिस्मा हुआ। परन्तु यरदन पर पहला बपतिस्मा चालीस वर्षों के लिए टाल दिया गया, जब तक कि कादेश की दूसरी यात्रा और यरदन का वास्तविक बपतिस्मा न हो गया। तीसरा बपतिस्मा, जो यहूदियों के लिए मुलाक्रात का समय दर्शाता था, तब आ पहुँचा जब मसीह ने दानिय्येल नौ और पद सत्ताईस की पूर्ति में एक सप्ताह के लिए वाचा की पुष्टि करने का अपना कार्य आरम्भ किया, और यह प्राचीन इस्राएल के लिए न्याय की घड़ी थी।

लाल समुद्र में पहला बपतिस्मा पहले स्वर्गदूत का संदेश है, और कादेश की दो यात्राएँ एक "दोहराव" का प्रतिनिधित्व करती हैं; क्योंकि पहली बार कादेश की यात्रा तथा यरदन नदी पर परमेश्वर की वाचा की प्रजा के विद्रोह का प्रतिनिधित्व होता है, और दूसरी बार कादेश में नेतृत्व का विद्रोह प्रकट होता है। कादेश और वहाँ की दो यात्राएँ दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के दोहराव का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ दो वर्ग प्रकट होते हैं, और दोनों वर्गों में सामान्य जन तथा नेतृत्व—दोनों का ही प्रतिनिधित्व होता है। मसीह का बपतिस्मा तीसरे स्वर्गदूत का संदेश है, जब गेहूँ और जंगली घास अलग की जाती है, जैसे प्राचीन इस्राएल का उस मसीही दुल्हन से अलगाव हुआ, जिससे मसीह ने प्राचीन इस्राएल के न्याय के समय विवाह किया।

1844 से 1863 की अवधि, लाल सागर से कादेश में पहले विद्रोह तक की है। 1844 लाल सागर पार करना है, 1846 मन है, जो सब्त की परीक्षा का प्रतीक है, जिसे व्हाइट दंपति ने 1846 में विवाह के समय उत्तीर्ण किया। 1849 में प्रभु ने अपने लोगों को इकट्ठा करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया। उन्होंने उन्हें पहले स्वर्गदूत के संदेश के दौरान इकट्ठा किया था, जब हबक्कूक की तालिकाओं में से पहली इतिहास में आई थी, और दूसरी तालिका उसी उद्देश्य के लिए बनाई गई थी।

ओमेगा 1850 की तालिका का उद्देश्य एकत्र करना और परखना था, क्योंकि अल्फा 1843 की तालिका ने यही किया था। पहले स्वर्गदूत के पास एक तालिका थी, और तीसरे स्वर्गदूत के पास भी एक तालिका थी, क्योंकि पहला अल्फा है और तीसरा ओमेगा। "दो तालिकाएँ" पहले और तीसरे स्वर्गदूत के मार्गचिह्न हैं—दूसरे के नहीं। "तालिकाओं" की भविष्यसूचक अवधि एक त्रुटिपूर्ण तालिका से शुरू होती है और एक त्रुटिरहित तालिका पर समाप्त होती है। दोनों तालिकाओं के बीच का इतिहास दूसरे स्वर्गदूत का इतिहास है, जहाँ चार्ट को 1850 तक अलग रख दिया जाता है।

19 अप्रैल, 1844 को 1843 वर्ष समाप्त होने के बाद, 1843 का चार्ट एक तरफ रख दिया गया, क्योंकि तब वह गलत रूप से वर्ष 1843 ही की भविष्यवाणी कर रहा था। 19 अप्रैल, 1844 से 1850 तक हबक्कूक की कोई तालिका नहीं है। दूसरे स्वर्गदूत के इतिहास में, कोई चार्ट नहीं था, और बाबेल गिर पड़ा। अल्फा एक तालिका है, ओमेगा एक तालिका है, और बीच में बाबेल का पतन है; यह विद्रोह का एक प्रतीक है, जो उस अवधि से जुड़ा है जब कोई तालिका नहीं थी। हबक्कूक की तालिकाओं की ऐतिहासिक अवधि पर सत्य की मुहर लगी है।

1850 को सीनै और व्यवस्था दिए जाने की घटना द्वारा प्रतीकित किया गया था। उस घटना का स्मरण पेंटेकोस्ट पर किया गया, जब दो हिलाई जाने वाली रोटियाँ उठाई गईं। हिलाई जाने वाली रोटियों को उठाने की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व मई 1842 में तालिका के मुद्रण और प्रचार, 1849 के इतिहास जब दूसरा चार्ट तैयार किया गया, और 1850 जब वह उपलब्ध हुआ, के माध्यम से किया गया। इस अवधि को मसीह की रेखा में उसके पुनरुत्थान से पेंटेकोस्ट तक के पचास दिनों के रूप में दर्शाया गया है, एक अवधि जो चालीस दिनों और उसके बाद दस दिनों में विभाजित है।

1849 में मसीह दूसरी बार अपना हाथ बढ़ा रहे थे, और 1850 में हबक्कूक की दूसरी तालिका उपलब्ध हो गई और कादेश की ओर ले जाने वाली परीक्षण प्रक्रिया आगे बढ़ी। 1856 में प्राचीन इस्राएल की दस परीक्षाओं में से अंतिम आ पहुँची, जब आंदोलन की पत्रिका में मिलर के मूलभूत भविष्यसूचक प्रकटीकरण पर नया प्रकाश प्रकाशित किया गया। 1856 से 1863 तक, पच्चीस सौ बीस भविष्यसूचक दिनों तक, जासूस भूमि की जांच करने भीतर गए। 1863 में उन्होंने उन्हें मिस्र वापस ले जाने के लिए एक नए नेता को चुना।

हम इन सत्यों को अगले लेख में जारी रखेंगे।

10 दिसंबर, 1871 को वरमोंट के बोर्डोविल में मुझे दिए गए एक दर्शन में, मुझे दिखाया गया कि मेरे पति की स्थिति बहुत कठिन रही है। चिंता और परिश्रम का दबाव उन पर रहा है। धर्मसेवा में उनके भाइयों को ये बोझ उठाने नहीं पड़े, और उन्होंने उनके परिश्रम की कद्र नहीं की। उन पर लगातार पड़ते दबाव ने उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से थका दिया है। मुझे दिखाया गया कि परमेश्वर की प्रजा के साथ उनका संबंध कुछ बातों में मूसा के इस्राएल के साथ संबंध के समान था। प्रतिकूल परिस्थितियों में मूसा के विरुद्ध बड़बड़ाने वाले थे, और उनके विरुद्ध भी ऐसे बड़बड़ाने वाले रहे हैं। टेस्टिमोनीज़, खंड 3, 85.